मंथन

अर्ध-वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

अक्टूबर, 2020

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

मंथन

संरक्षक एवं प्रेरणास्रोत

श्री दिवाकर नाथ मिश्रा

संयुक्त सचिव एवं निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण)

प्रधान संपादक

डॉ. जे. एस. रेड्डी

अपर निदेशक

सम्पादक

मनोज कुमार गुप्ता

उप निदेशक (तकनीकी)

सम्पादक मण्डल सदस्य

आर. एम. मंडलिक

उप निदेशक (तकनीकी)

श्री वसी असगर

सहायक निदेशक (तकनीकी)

निर्यात निरीक्षण परिषद

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग, भारत सरकार)

दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर, पूर्वी किदवई नगर,

नई दिल्ली–110023, भारत, दूरभाष : 011–20815386 / 87/88

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निर्यात निरीक्षण परिषद, हिंदी अनुभाग या सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क वितरण के लिए

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संदेश–एस. किशोर, अपर सचिव एवं अध्यक्ष, निर्यात निरीक्षण परिषद	3
2.	निदेशक की कलम से – श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, आई.ए.एस., संयुक्त सचिव एवं निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद	4
3.	संदेश–डॉ जे. एस. रेड्डी, अपर निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद	6
4.	संपादकीय – मनोज कुमार गुप्ता, उप निदेशक (तकनीकी), निर्यात निरीक्षण परिषद	7
5.	निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह–2020 की रिपोर्ट	8
6.	निनिप की गतिविधियाँ : अप्रैल 2020 से सितंबर 2020	12
7.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची में आयोजित हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह–2020 की रिपोर्ट	14
8.	मनुष्य का अस्तित्व	24
9.	सागर और सरिता	25
10.	भारत का निर्यातः अवसर और चुनौतियां–प्रमुख समस्याएं	26
11.	निनिअ–कोच्ची के मुख्यालय में आयोजित हिन्दी कार्याशाला की रिपोर्ट	29
12.	फूड सेफ्टी खाद्य सुरक्षा सबकी है जिम्मेदारी	31
13.	शहर और गांव....	32
14.	हिंदी दिवस का महत्त्व	33
15.	काम ही आराधना है	34
16.	जनसेवा का संदेश	35
17.	प्रदूषण – एक गंभीर समस्या	36
18.	क्योंकि संघर्ष अभी भी बाकी है	38
19.	जीवन संघर्ष है लड़ते रहो.....	39
20.	निर्यात व्यापार में प्रयोगशाला की भूमिका	40
21.	ऑनलाइन शिक्षा	42
22.	प्लास्टिक प्रदूषण के कारण एवं प्रभाव (स्वच्छता ही सेवा है)	44
23.	अवसाद (डिप्रेशन)	47
24.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई कार्यालय में नए पदभार ग्रहण/सेवानिवृत्र होने वाले अधिकारी/कर्मचारियों के नाम/पदनाम	48

Dr. S. Kishore, IAS
Additional Secretary

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग
उद्योग भवन, नई दिल्ली–110 011

Government of India
Ministry of Commerce & Industry
Department of Commerce
Udyog Bhawan, New Delhi-110 011

संदेश

मुझे यह जानकार अति प्रसन्नता हुई कि वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के नियंत्रणाधीन संगठन, निर्यात निरीक्षण परिषद, नई दिल्ली अपने अन्य दायित्वों के साथ–साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में राजभाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए सतत प्रयासरत रहती है । इसका एक जीवंत प्रमाण है, परिषद द्वारा एक हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन अविरत गति से संभव बनाना। सम्पूर्ण विश्व में कोविड – 2019 महामारी के इस दौर में भी परिषद की अर्धवार्षिक हिन्दी गृह–पत्रिका **''मंथन''** का प्रकाशन करना प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। संगठन में कार्यरत कार्मिकों द्वारा अपनी प्रतिभा को लेखनबद्ध करने में दिखाई यह रुचि वास्तव में सराहनीय है, और सभी अभिनंदन के पात्र हैं।

राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से होता रहे, इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

किशोर

(एस. किशोर)
अपर सचिव एवं अध्यक्ष
निर्यात निरीक्षण परिषद

सत्यमेव जयते

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत
EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

निदेशक की कलम से

मेरे प्रिय सहकर्मियों,

जैसा की हम लोग जानते है कि हिन्दी के विकास का अर्थ है– एक राष्ट्र, एक संस्कृति का विकास। हिन्दी का प्रचार प्रसार हमारा नैतिक कर्तव्य होने के साथ–साथ संवैधानिक दायित्व भी है। इसी कर्तव्य का पालन करते हुए निर्यात निरीक्षण परिषद की गृह पत्रिका **''मंथन''** के अक्टूबर, 2020 अंक को आपके सम्मुख पेश करने में मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है।

निर्यात निरीक्षण परिषद एवं सभी निर्यात निरीक्षण अभिकरणों में बड़े उत्साह से विशेष पर्व हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह –2020 का आयोजन सितम्बर माह में आयोजित किया गया। इस पर्व के विशेष आयोजन पर सभी कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, इन प्रतियोगिताएं में विजयी प्रतियोगी को विभाग के द्वारा पुरुस्कृत किया गया। जैसा कि हम सभी जानते है कि हिन्दी भारत के एक बड़े जन समुदाय द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली भाषा एक अत्यंत सरल एवं सशक्त भाषा, हमारी राष्ट्रीय पहचान, तथा हमारी सांस्कृतिक समृद्धि की प्रतीक है। हिन्दी के इस महत्व को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था। इसी अनुक्रम में 26 जनवरी, 1950 में लागू संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी होगी तथा इसकी लिपि, देवनागरी होगी। कुछ समय से हिन्दी को कार्यान्वित करने के लिए अनेक ई–टूल्स भी विकसित किए गए हैं।

दुनिया का कोई भी देश भाषाई विविधता में भारत की बराबरी नहीं कर सकता। इस भाषाई विविधता के साथ वेशभूषा, रहन सहन और अन्य कई बातों में विविधता दृश्यमान हैं। भारत के विकास के लिये यह ज़रूरी है कि इन विविधताओं में एकरूपता लाना। इस महत्वपूर्ण लक्ष्य के साक्षात्कार में हिंदी ही अपनी प्रचुरता एवं सरलता के साथ सभी अनेकताओं को एक सूत्र में बाँधते हुए भारतीयों के आपसी संपर्क को मज़बूत करने का अतिविशिष्ट दायित्व संभालने में सफलता मिली है। भारत की चारों दिशाओं को एकस्वरूप देते हुए एकता के साथ एक महान संस्कृति को आत्मसात करने का दिव्य दायित्व हिंदी ने सँभाला हैं। यह समस्त भारतीयों को गौरवांन्वित करने का महत्वपूर्ण देन

है। भारत के विकास के लिए यह ज़रूरी है कि भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्से द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी को आपसी संपर्क का कड़ी बनाना।

कोरोना महामारी के साथ शुरु हुआ वर्ष 2020 ने कई तरह की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए इस संकटकाल में भी हमने अपने कार्यालयीन कार्यों में व्यवधान लाये बिना पूर्ण समर्पण से कार्य करने का प्रयास किया है। निर्यात निरीक्षण परिषद/निर्यात निरीक्षण अभिकरणों की गतिविधियों की समीक्षा करने के लिए दिनांक 13 अगस्त 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से निनिप / निनिअ के अपर सचिव एवं अध्यक्ष द्वारा एक बैठक आयोजित की गई। इसके साथ–साथ निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई की प्रयोगशाला में शहद के लिए एन.एम.आर. परीक्षण 01 अगस्त 2020 को मिलावट और भौगोलिक उत्पत्ति/प्रामाणिकता का पता लगाने के लिए स्थापित किया गया हैं। निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई प्रयोगशाला को एन.एम. आर परीक्षण के अतिरिक्त दायरे के अनुसार आईएसओ.17025:2017 के अनुसार मान्यता मिल गई है। दिनांक 22 सितंबर 2020 को इंटरनेशनल ट्रेनिंग सेंटर फॉर फूड सेफ्टी एंड एप्लाइड न्यूट्रिशन, निर्यात निरीक्षण परिषद, की संयुक्त पहल से अपनी प्रथम वर्षगांठ मनाई। एक वर्ष में इस केंद्र में 150 से अधिक कार्यक्रम और 30,000 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। इसमें निर्यात निरीक्षण परिषद एक अहम भूमिका निभा रहा हैं। निनिप ने – सितंबर 2020 में अब तक के इतिहास में पहली बार वर्चुअल सेशन कोडेक्स एलेमेंट्रिस आयोग के 43वें सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के रूप में भाग लिया।

जनता की अपनी भाषा में सरकारी कामकाज निभाने से देश के विकास की गति तेज़ होगी और आपसी व्यवहार में पारदर्शिता आएगी। इसके लिये हिंदी के प्रचार प्रसार में गति बढ़ाने एवं भारत के शासकीय प्रयोजनों के लिये हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना अति आवश्यक है। इसी दौर में वैज्ञानिक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों को भी समाविष्ट करते हुए हिंदी के विकास को समृद्ध बनाना है। भाषा को अधिक सहज एवं सरल बनाते हुए साधारण जन की भाषा मानते हुए उसका प्रयोग करना चाहिए। आजकल सरकारी कार्यालयों में भी कंप्यूटर के माध्यम से उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाएं वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग आसान बना दिया गया है। अतः कार्यालय के रोजमर्रा के कार्यों में इन सुविधाओं का प्रयोग सुनिश्चित करते हुए हिंदी के विकास में तेजी लाने का महत्वपूर्ण दायित्व हम सबका है।

गृहपत्रिका **''मंथन''** के प्रकाशन में हिंदी भाषी लोगों की तरह हिंदीतर प्रदेशों के लोगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत भर में फैले परिषद के क्षेत्रीय अभिकरणों एवं अधीनस्थ कार्यालयों के कार्मिक अपने रचना वैभव से इस पत्रिका को सजाया संवारा है। आशा करता हूँ कि आप की रचनाओं से संपुष्ट **''मंथन''** पत्रिका अविरत प्रकाशित होती रहें, और राजभाषा के प्रति सचेत रहने का एक सशक्त माध्यम बनी रहें।

निर्यात निरीक्षण परिषद/निर्यात निरीक्षण अभिकरण परिवार के समस्त कार्मिकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं के साथ,

(दिवाकर नाथ मिश्रा, आई.ए.एस.)
संयुक्त सचिव एवं निदेशक
निर्यात निरीक्षण परिषद

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

EXPORT INSPECTION COUNCIL

(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)

(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)

2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

संदेश

निर्यात निरीक्षण परिषद तथा इससे जुड़े अभिकरणों एवं उप कार्यालयों में राजभाषा नियमों एवं अधिनियमों के तहत हिंदी के प्रचार प्रसार के लिये निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, इस प्रगतिपरक उद्देश्य को चार चांद लगाने के लिये हिंदी गृह पत्रिका का निरंतर प्रकाशन जारी रखते हुए **''मंथन''** गृह पत्रिका अक्टूबर–2020 के अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा हैं।

वर्ष 2020 के प्रथम चरण पर ही कोविड–19 महामारी ने समस्त जगत को झकझोर दिया। महामारी की परेशानियों से जूझते हुए हम डिजिटल दुनिया के सहारे कर्तव्यों के पालन में हरसंभव प्रयत्नशील रहे है, निर्यात निरीक्षण परिषद/अभिकरणों के कार्यालयों में 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2020 तक हिन्दी दिवस/पखवाडें का आयोजन किया गया, इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित करते हुए विजयी प्रतियोगी को पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया। निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय ने अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करते हुए हिन्दी के प्रचार–प्रसार का भी पूरी तरह से ध्यान रखा है।

मुझे विश्वास है कि ज़िंदगी की स्वाभाविक गति अपनाते हुए वर्ष 2021 स्वास्थ्य, सामाजिक एवं अर्थव्यवस्थाओं में तीव्र गति से उपलब्धियां हासिल करने में सफल रहेगा। निनिप एवं निनिअ के अधिकारियों/कर्मचारियों भी देश के प्रति सचेत रहकर अपनी अपनी कर्मभूमि में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहेंगे।

निर्यात निरीक्षण परिषद की ओर से प्रकाशित **''मंथन''** गृह पत्रिका इस संगठन में कार्यरत कार्मिकों के रचनात्मक वैभव का द्योतक है। इसे अविरत प्रकाशित करने में हम सफल रहे हैं। राजभाषा के प्रचार प्रसार में परिषद की गृह पत्रिका ''मंथन'' को गरिमा के साथ सजाने संवारने का महत्वपूर्ण दायित्व हमारा है। आगे भी निष्ठा के साथ राजभाषा हिंदी की महत्वा को उजागर करते हुए अपने कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में निभाने के साथ साथ अपने भावों और विचारों को लिपिबद्ध करते हुए **''मंथन''** पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता में अपना अपना योगदान सुनिश्चित करते रहें।

निर्यात निरीक्षण परिषद/निर्यात निरीक्षण अभिकरण परिवार के समस्त कार्मिको को नव वर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ जे. एस. रेड्डी)
अपर निदेशक

E-mail : eic@eicindia.gov.in
Website : www.eicindia.gov.in
ग्राम : निर्यातगुण
Grames : Shipmentquality
दूरभाष / Phone } 011-20815386/87/88

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत
EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय द्वारा प्रकाशित छमाही गृह पत्रिका **'मंथन'** के अक्टूबर, 2020 अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करने में मुझे अपार प्रसन्नता एवं गर्व का अहसास हो रहा है. इसके लिए निर्यात निरीक्षण परिषद्/निर्यात निरीक्षण अभिकरणों एवं उप कार्यालयों के प्रत्येक सदस्य को शुभकामनाएं देता हूँ।

निर्यात निरीक्षण परिषद् सदैव राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत रहती है, इसी कड़ी में हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन, कार्यालयों के सदस्यों के हिन्दी ज्ञान को परिपोषित करते हुए उनके सृजनात्मक कुशलता को उजागर करने का एक प्रयास हैं. सभी सदस्यों से आग्रह है कि पत्रिका का प्रकाशन सफलता से आगे ले चलने में अपनी रचनाएं प्रदान करते हुए इसमें भागीदारी सुनिश्चित करें।

'मंथन' पत्रिका के प्रकाशन को और अधिक रोचक एवं सार्थक बनाने में पाठकों के बहुमूल्य विचारों का अति महत्वपूर्ण स्थान हैं। यह अंक भी आपके बहुमूल्य विचारों एवं प्रतिक्रिया के लिए सहर्ष आपके समक्ष समर्पित हैं।

निर्यात निरीक्षण परिषद/निर्यात निरीक्षण अभिकरण के समस्त कार्मिकों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

मनोज गुप्ता

(मनोज कुमार गुप्ता)
उप–निदेशक (तकनीकी)

निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह - 2020 की रिपोर्ट

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार निर्यात निरीक्षण परिषद, कार्यालय में दिनांक 14.9.2020 से 28.09.2020 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह – 2020 का सफल आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.9.2020 को प्रातः 11.00 बजे अपर निदेशक महोदय की अध्यक्षता में कार्यक्रमों का संचालन बड़े उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री वसी असगर, सहायक निदेशक द्वारा किया गया। सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत भाषण में हिंदी दिवस की महत्ता के बारे में सभी को जानकारी दी गई। डॉ. जे. एस. रेड्डी, अपर निदेशक महोदय द्वारा निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय में हिन्दी दिवस/पखवाडा समारोह–2020 का औपचारिक उद्घाटन किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए निनिप में किए जा रहे कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया, और आगे भी सक्रिय रूप से हिंदी का कार्यान्वयन सफलता से करने के लिए सभी से आह्वान किया गया।

माननीय निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण) महोदय द्वारा हिन्दी दिवस/पखवाड़े के शुभ अवसर पर दिए गये संदेश का वाचन डॉ. जे. एस. रेड्डी, अपर निदेशक महोदय द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री वसी असगर, सहायक निदेशक द्वारा किए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय में हिन्दी दिवस एवं पखवाड़ा समारोह के उद्घाटन समारोह पर इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में कार्यक्रम आयोजित करने से संबंधित सभी कार्मिकों को अवगत कराया गया।

हिन्दी दिवस/पखवाड़े के कार्यक्रम के दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई.

1. दिनांक 15 सितम्बर, 2020 को 11.30 बजे से 12.00 बजे तक एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी, जिसका विषय –**''कोरोना महामारी बीमारी से बचाव के उपाय''।**
2. दिनांक 21 सितम्बर, 2020 को समय 3.00. बजे से 5.00 बजे तक अपर निदेशक महोदय की अध्यक्षता में वाणिज्य एंव उद्योग मंत्रालय से विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित श्री बी. एन. मिश्रा, रि. उपनिदेशक के द्वारा कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई।
3. दिनांक 22 सितम्बर, 2020 को समय 11.00 बजे से 11.30 बजे तक एक टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।
4. दिनांक 25 सितम्बर, 2020 को कार्यालय में 10.30 से 11.00 बजे तक एक अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्रतियोगिताओं के परिणाम की सूची नीचे क्रमबद्ध है :–

क्रम सं.	प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	निबंध प्रतियोगिता	श्रीमती सारिका दुआ लिपिक श्रेणी–II	श्री कुशल कुमार, सहायक निदेशक	श्रीमती मेघा अरोड़ा लिपिक, श्रेणी –II
2	हिन्दी टिप्पण, एवं आलेखन	कु. हेताक्षी परमार लिपिक, श्रेणी –II	श्री राहुल शर्मा कार्यालय सहायक	कु. अंजु शर्मा, लिपिक, श्रेणी –II
3	अनुवाद	श्री कुशल कुमार, सहायक निदेशक	श्री. शशि प्रकाश त्रिपाठी तकनीकी अधिकारी	श्रीमती अर्चना पिल्लई लिपिक, श्रेणी –II

हिंदी पखवाडे का समापन समारोह दिनांक 28.09.2020 को अपर निदेशक महोदय की अध्यक्षता में शानदार तरीके से किया गया। अपर निदेशक महोदय ने अपने भाषण में हिंदी पखवाडा समारोह के आयोजन से सरकार की राजभाषा नीति को तेज़ी से अमल में लाने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयास को प्रोत्साहित करने के महत्वपूर्ण उद्देश्य पर प्रकाश डाला और पखवाडा समारोह के पश्चात् भी राजभाषा के कार्यान्वयन में निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सक्रिय सहयोग एवं बहुमूल्य सहकारिता से कार्यक्रम को सफलता से आयोजित कर सके। प्रतियोगिताओं

के विजेताओं को अपर निदेशक महोदय के द्वारा घरेलू वस्तुओं को पुरुस्कार के रुप में देकर सम्मानित किया गया।

हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़े का आयोजन कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करने में प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया। सभी कर्मचारियों से विशेष रुप से इस अवधि के दौरान कार्यालयीन कार्य यथा संभव हिंदी में करने में विशेष प्रयास करने और हस्ताक्षर हिंदी में करने के लिये अनुरोध किया गया।

हिन्दी अनुभाग द्वारा सभी का आभार एवं धन्यवाद प्रकट करते हुए हिन्दी दिवस/पखवाड़े का समापन किया गया।

निर्यात निरीक्षण परिषद, कार्यालय में हिन्दी दिवस/पखवाड़ा

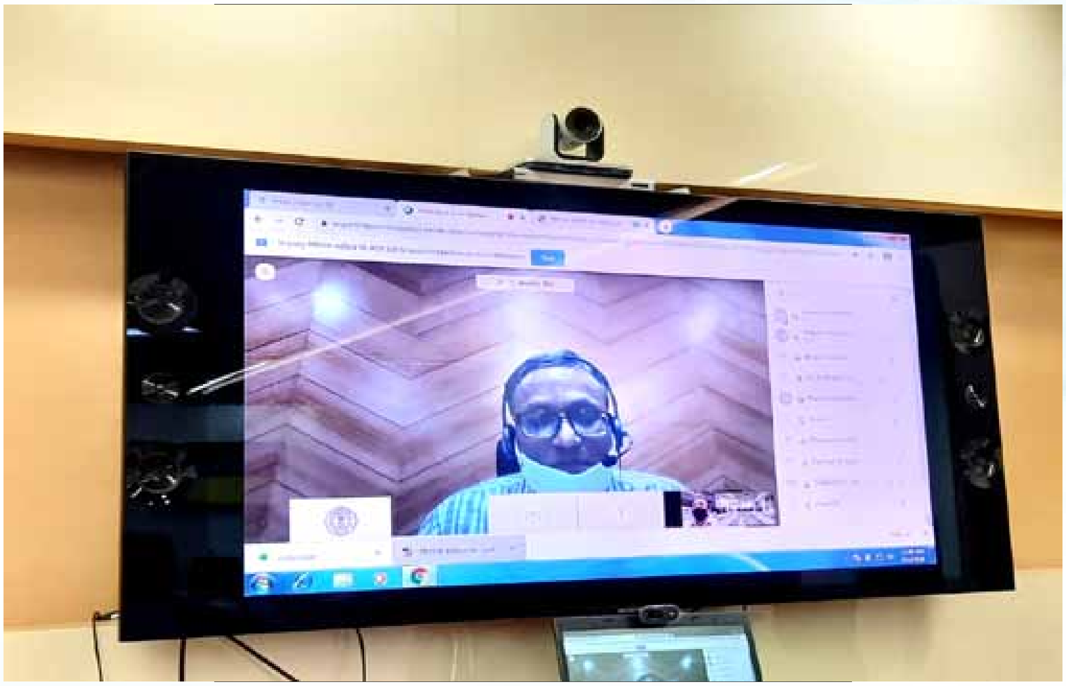

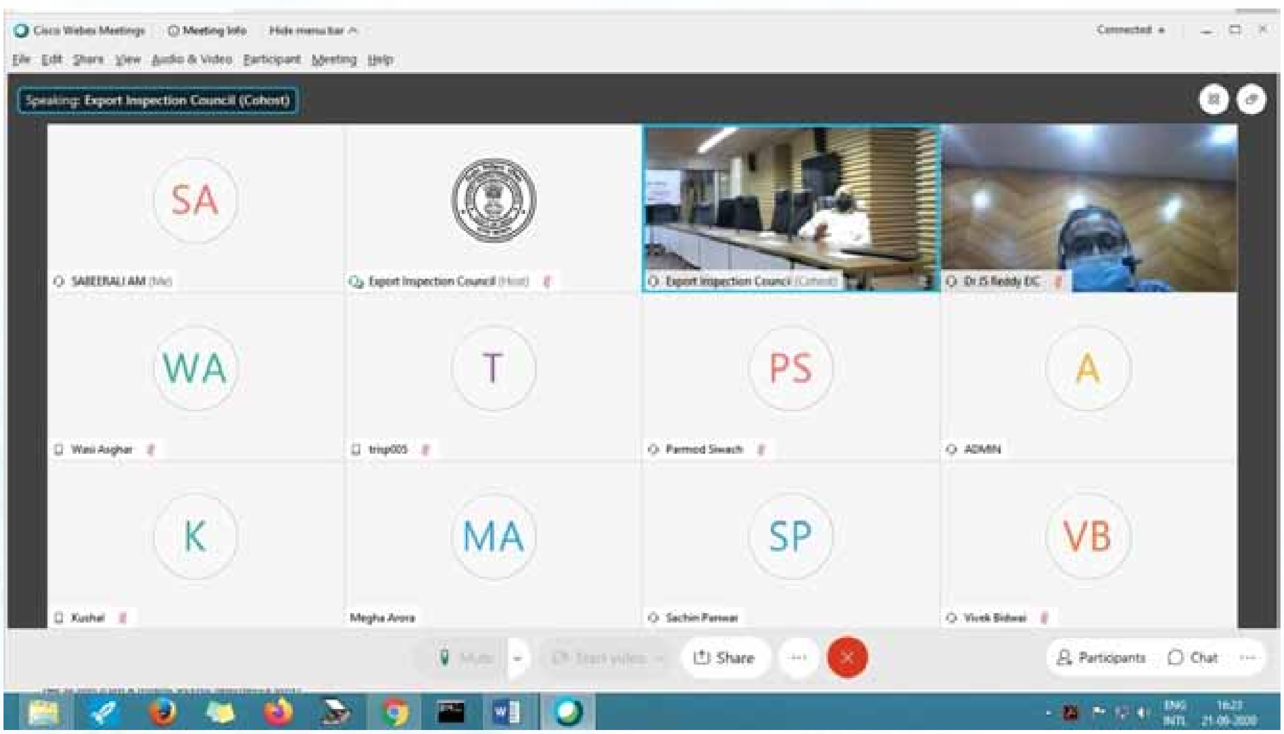

निर्यात निरीक्षण परिषद, कार्यालय में हिन्दी दिवस/पखवाड़े के दौरान दिनांक 21 सितम्बर, 2020 को अपर निदेशक महोदय की अध्यक्षता में विशेष अतिथि श्री भास्कर कुमार मिश्रा, रि. उप निदेशक, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार की दिव्य उपस्थिति में ऑन लाइन तरीके से हिन्दी कार्यशाला सम्पन्न हुई।

निनिप की गतिविधियाँ : अप्रैल 2020 से सितंबर 2020

- निनिअ के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा दिनांक 21.05.2020 को आतंकवाद विरोधी दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा ली गई थी।

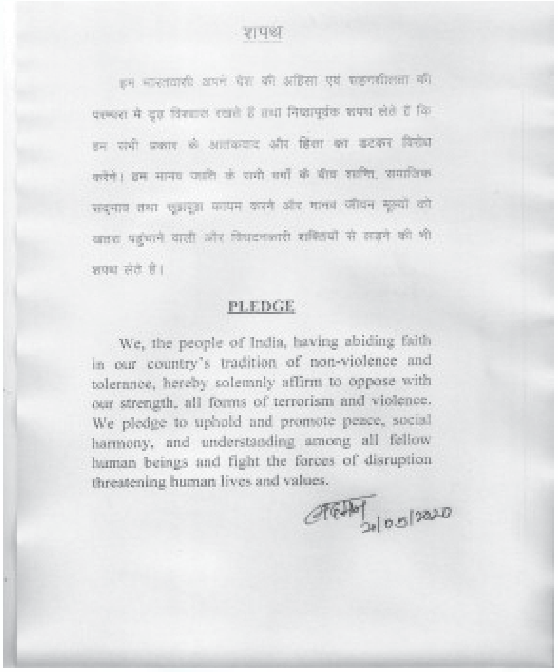

शपथ

हम भारतवासी अपने देश की अहिंसा एवं सहनशीलता की परम्परा में दृढ़ विश्वास रखते हैं तथा निष्ठापूर्वक शपथ लेते हैं कि हम सभी प्रकार के आतंकवाद और हिंसा का डटकर विरोध करेंगे। हम मानव जाति के सभी वर्गों के बीच शांति, सामाजिक सद्भाव तथा सूझबूझ कायम करने और मानव जीवन मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली और विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते हैं।

PLEDGE

We, the people of India, having abiding faith in our country's tradition of non-violence and tolerance, hereby solemnly affirm to oppose with our strength, all forms of terrorism and violence. We pledge to uphold and promote peace, social harmony, and understanding among all fellow human beings and fight the forces of disruption threatening human lives and values.

- निर्यात निरीक्षण परिषद (निनिप), कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के कामकाज की समीक्षा करने के लिए माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री, श्री पीयूष गोयल ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से, 12 जून 2020 को एक बैठक की अध्यक्षता की। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) की बैठक के दौरान, माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने मानव इंटरफ़ेस को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग पर बल दिया।
- शहद के लिए एन.एम.आर. (परमाणु चुंबकीय अनुनाद) परीक्षण का परिचय 1 अगस्त 2020 से मिलावट और भौगोलिक उत्पत्ति/प्रामाणिकता का पता लगाने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका को निर्यात के लिए था। निनिअ–मुंबई प्रयोगशाला को एन.एम.आर परीक्षण के अतिरिक्त दायरे के अनुसार आईएसओ. 17025:2017 के अनुसार मान्यता मिल गई है ।
- 13 अगस्त 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से निनिप/निनिअ की गतिविधियों की समीक्षा करने के लिए निनिप/निनिअ की गतिविधियों की समीक्षा करने के लिए निनिप/निनिअ के अपर सचिव और अध्यक्ष द्वारा बैठक आयोजित की गई। अध्यक्ष, निनिप ने इस बात पर जोर दिया गया कि निनिप/निनिअ यह सुनिश्चित करें, कि सभी गतिविधियाँ डिजिटाइज़ की गई हैं। प्रणाली में और अधिक पारदर्शिता लाने और निर्यात बिरादरी के लिए कुशल और तेज सेवाएं देने के लिए संभव बनाया गया।
- आईटीसी– एफएसएएन (इंटरनेशनल ट्रेनिंग सेंटर फॉर फूड सेफ्टी एंड एप्लाइड न्यूट्रिशन), निनिप, एफएसएसएआई और जीएफएसपी की संयुक्त पहल ने 22 सितंबर 2020 को अपनी प्रथम वर्षगांठ मनाई। एक वर्ष में इस केंद्र में 150 से अधिक कार्यक्रमों और 30,000 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया।
- निनिप ने कोडेक्स एलेमेंट्रिस आयोग के 43वें सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के भाग के रूप में भाग लिया – सितंबर 2020 में अब तक के इतिहास में पहली बार वर्चुअल सेशन आयोजित किया गया।

- निनिप ने सितंबर 2020 के दौरान गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली मानक आईएसओ 9001: 2015 की दिशा में सफलतापूर्वक प्राप्त किया।
- 25.08.2020 को आईटीसी–एफएसएएन/निनिप द्वारा संचालित निर्यात व्यापार के लिए चावल के विश्लेषण पर ऑनलाइन (वर्चुअल) प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- 27.08.2020 – 28.08.2020 के दौरान आईटीसी–एफएसएएन/निनिप द्वारा आयोजित निर्यात व्यापार के लिए मछली और मत्स्य उत्पादों के नमूने और विश्लेषण पर दो दिनों का ऑनलाइन कार्यक्रम।

निर्यात निरीक्षण अभिकरण-कोच्ची में आयोजित हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह - 2020 की रिपोर्ट

निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची मुख्यालय एवं उप कार्यालयों में दिनांक 14.9.2020 से 28.09.2020 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह – 2020 का सफल आयोजन किया गया।

श्री खिमानंद, वरिष्ठ लेखाधिकारी कार्यक्रम के मुख्य संयोजक रहे। इस वर्ष कोविड 19 महामारी के व्यापन के परिप्रेक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों, मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी) को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़े का आयोजन कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करने में प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया। सभी कर्मचारियों से खास तौर पर इस अवधि के दौरान कार्यालयीन कार्य यथा संभव हिंदी में करने में विशेष प्रयास करने और हस्ताक्षर हिंदी में करने के लिये अनुरोध किया गया।

समिति के निर्णयानुसार दिनांक 14.9.2020 को संपूर्ण गरिमा के साथ हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। दिनांक 14.9.2020 को सुबह 11.00 बजे आयोजन समिति के संयोजक श्री. सुधांशु शेखर दास, सहायक निदेशक के नेतृत्व में कार्यक्रमों का संचालन बड़े उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. पी.के. प्रमोद, सहायक निदेशक द्वारा की गई ईश्वर वदना से हुआ। सभा का संचालन श्री खिमानंद, वरिष्ठ लेखाधिकारी द्वारा किया गया। उनके द्वारा सभा का स्वागत किया गया। स्वागत भाषण में हिंदी दिवस की महत्ता के बारे में सभा को जानकारी दी गई। कार्यालय प्रभारी श्री.जी. जयपालन, उप निदेशक द्वारा निनिअ–कोच्ची द्वारा पखवाडा समारोह–2020 का औपचारिक उद्घाटन किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए निनिअ–कोच्ची में किए जा रहे कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया, और आगे भी सक्रिय रूप से हिंदी का कार्यान्वयन सफलता से करने के लिए सभी से आह्वान किया गया।

माननीय निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण) महोदय से प्राप्त संदेश का वाचन श्री जी. जयपालन, उप निदेशक द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री.दुर्गे अरविंद कुमार वसंतराव, सहायक निदेशक द्वारा बधाई भाषण किया गया। डॉ.एस.सुधा, तकनीकी अधिकारी द्वारा किए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हिन्दी दिवस एवं पखवाड़ा समारोह के उद्घाटन समारोह का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का आयोजन व्यवस्थित तरीके से किया गया। इस बार कोविड–19 महामारी के प्रकोप के कारण केवल 5 लिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिताओं के परिणाम की सूची नीचे क्रमबद्ध है :

क्रम सं.	प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	हिन्दी पत्र –लेखन	डॉ. सुधा एस. तकनीकी अधिकारी	डॉ.अभिजित, भारत सातपुते सहायक निदेशक	श्री आकाश कुमार चौबे लिपिक, श्रेणी –II
2	सारॉंश लेखन	श्रीमती सेरिन जोसफ प्रयोगशाला सहायक श्रेणी–II	डॉ. सुधा एस. तकनीकी अधिकारी	श्री एम. कालिराज कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक
3	हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं अनुवाद	डॉ.अभिजित भारत सातपुते सहायक निदेशक	श्री. विपिन कुमार लिपिक, श्रेणी –II	श्री देबोजित चक्रवर्ती तकनीकी अधिकारी
4	निबंध प्रतियोगिता	श्री. विपिन कुमार लिपिक, श्रेणी –II	डॉ.अभिजित भारत सातपुते सहायक निदेशक	श्री दुर्गे अरविंद कुमार वसंतराव सहायक निदेशक
5	राजभाषा ज्ञान	श्री देबोजित चक्रवर्ती तकनीकी अधिकारी	श्री. आकाश कुमार चौबे लिपिक, श्रेणी –II	श्रीमती गीतालक्ष्मी लिपिक, श्रेणी –II

हिंदी पखवाडे का समापन समारोह दिनांक 28.09.2020 को शानदार तरीके से किया गया। समापन समारोह में श्री. के.के. रामचंद्रन, उप निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आयकर आयुक्त कार्यालय, कोच्ची वीडियो कॉन्फ्रंसिंग के माध्यम से मुख्य अतिथि रहे। श्री. खिमा नंद, वरिष्ठ लेखाधिकारी द्वारा सभा का संबोधन किया गया। श्री देबोजित, तकनीकी अधिकारी द्वारा निभाई गई, ईश्वर वंदना से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तदुपरांत डॉ. अभिजीत सातपुते, सहायक निदेशक द्वारा स्वागत भाषण किया गया। श्री जी. जयपालन, उप निदेशक प्रभारी द्वारा अध्यक्षीय भाषण किया गया। उन्होंने अपने भाषण में हिंदी पखवाडा समारोह के आयोजन से सरकार की राजभाषा नीति को तेज़ी से अमल में लाने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयास को प्रोत्साहित करने के महत्वपूर्ण उद्देश्य पर प्रकाश डाला और पखवाडा समारोह के पश्चात भी राजभाषा के कार्यान्वयन में निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया।

सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सक्रिय सहयोग एवं बहुमूल्य सहकारिता से कार्यक्रम सफलता से आयोजित कर सके। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को ट्रोफियां देकर सम्मानित किया गया। सबसे अधिक अंक पाए निरीक्षण अनुभाग को राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी प्रदान की गई। इस अवसर पर कार्यशाला के अंतिम सत्र में आयोजित मूल्यांकन परीक्षाओं में प्रथम तीन स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को भी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

निनिअ–कोच्ची के मुख्यालय की तरह इसके उप कार्यालय–कोल्लम, बैंगलूर एवं मैंगलूर में दिनांक 14 सितम्बर, 2020 से 28 सितम्बर, 2020 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाडे का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। मुख्यालय के आयोजन से संबद्ध कुछ छायाचित्र संलग्न हैं।

निनिअ–कोच्ची में आयोजित हिंदी दिवस का आयोजन तथा हिंदी पखवाड़ा समारोह का औपचारिक उद्घाटन करते हुए श्री. जी. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी)

निदेशक महोदय के संदेश का वाचन करते हुए श्री. जी. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी)

निनिअ–कोच्ची के हिंदी पखवाड़ा समारोह के समापन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री जी. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी)

समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री के. के. रामचंद्रन, उप निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आयकर आयुक्त कार्यालय, कोच्ची की वीडियो कॉन्फ्रंसिंग के माध्यम से उपस्थिति

EXPORT INSPECTION AGENCY – KOCHI
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

EXPORT INSPECTION AGENCY – KOCHI
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

निर्यात निरीक्षण अभिकरण - कोच्ची
EXPORT INSPECTION AGENCY – KOCHI
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

निर्यात निरीक्षण अभिकरण - कोच्ची
EXPORT INSPECTION AGENCY – KOCHI
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

EXPORT INSPECTION AGENCY - KOCHI
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

EXPORT INSPECTION AGENCY - KOCHI
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

निनिअ–कोच्ची में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते अधिकारी / कर्मचारी श्री जि. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी) से पुरस्कार ग्रहण करते हुए

निनिअ—कोच्ची में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सबसे अधिक अंक प्राप्त निरीक्षण अनुभाग को राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी प्राप्त हुई और श्री जी. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी) से ट्रॉफी ग्रहण कर रहे हैं निरीक्षण अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी।

हिंदी कार्यशाला के अंतिम घंटे में आयोजित मूल्यांकन परीक्षा में पुरस्कार जीते प्रतिभागी पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

मनुष्य का अस्तित्व

ब्रजेश कुमार शर्मा
निनिप, नई दिल्ली

जो मनुष्य अपने को नहीं जानता, वह अज्ञानी है, क्योंकि अविश्वास के कारण वह सही निर्णय करने में असमर्थ रहता है। वस्तुतः जीवन जब अपने को विस्मृति के गर्त में डालकर भौतिक पदार्थों में लीन होकर अपने को उनमें संबंद्ध कर लेता है, तब उसकी चेतना ज्ञान शक्ति लुप्त हो जाती है। मनुष्य अपने को भूलकर अपने उस रूप को ही अपना स्वरूप मान लेता है जो वह सोचता है। धन, पद, परिवार, शक्ति, जाति, देश, वर्ग की भावनाएँ तब सिर उठाती हैं, और पशुता के भाव का विकास होने लगता है।

क्या मेरा शरीर ही मैं हूँ, क्या यह छोटा–सा घर ही मेरा है, तब तक के लिए कौन जानता है। अनंत जन्म हुए मेरे, यह मैं भूल गया, स्मरण है केवल आज, किंतु यह सत्य मुझे गिराता है इसलिए यह सत्य नहीं है। ईश्वर सत्य है, वह ज्ञान का भंडार है, आनंद का स्रोत है, उसका आकार नहीं, वह तो अणु–अणु में व्याप्त है। ब्रह्मांड का कोई स्थान नहीं, जहाँ वह न हो। वह सर्वशक्तिमान है। अर्थात् अपने नियमों को चलाने के लिए उसे किसी का भी सहारा लेने की आवश्यकता नहीं है।

सभी प्रकार की शक्तियों का केंद्र प्रेरक और दाता वह ही है। वह न्यायकारी है। न वह खुशामद से प्रसन्न होता है, न निंदा से रुष्ट। वह तो सभी को समान रूप से अपने–अपने कर्मों के अनुसार ही फल देता है। उसकी न्याय व्यवस्था में कहीं भी कोई दोष हो ही नहीं सकता। जो भक्तजन यह समझते हैं कि वह मान लेने से प्रसन्न होकर हमें औरों से अधिक कुछ दे देगा, वे भ्रम में है। आप जो भी बुरा काम करेंगे, उसका दंड तो मिलेगा ही। वह क्षमा नहीं करता। अच्छे कर्मों का अच्छा फल भी मिलेगा, पर उसके बुरे कर्मों का दंड छूट नहीं सकता। वह दयालु है। सभी को जीवन की उन्नति के लिए साधन जुटाता है। गर्भ में भी बच्चे को पालता है। उसने हमें शांति और आनंद प्राप्त करने के लिए बुद्धि दी है। लाखों रुपए से भी मूल्यवान इंद्रियाँ दी हैं। उसकी दया सभी पर समान है। पक्षपात से शून्य जैसे पिता सभी पुत्रों को पालता है वैसे ही प्रभु भी सभी जीवधारियों का पालन पोषण करता है।

वह अजन्मा है। न जन्म लेता है न मरता है। जिसका जन्म होगा, उसकी मृत्यु भी होगी। किंतु वह तो सदा से है, सदा रहेगा। देह–रूप आकार से परे वह प्रभु अजन्मा है। अर्थात् कभी न उसका ह्रास होता है, न वृद्धि। वह अनन्त है। वह सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है। अतः वह असीम और अनंत है। सीमाओं के बंधन से दूर, ज्योतिर्मय प्रकाश के पुंज, प्राणों के कण–कण में छाया, चिर अनंत वह, जिसकी महिमा देख चकित–सा, विश्व खड़ा है वह सस्मित सा।

वह ईश्वर निर्विकार है, उसमें कोई विकार हो ही कैसे सकता है, क्योंकि वह काल, मृत्यु, जरा जन्म सबसे दूर है। सदा एक सा रहने वाला है। इसीलिए वह ईश्वर हैं।

सागर और सरिता

शशि प्रकाश त्रिपाठी
तकनीकी अधिकारी
निनिप, नई दिल्ली

एक दिन सागर ने सरिता से पूछा– ''तुम इतने वेग से बहती हुई मेरे पास तक आती हो और उस रास्ते में जिससे चलकर आती हो बहुत–से वृक्ष उखड़ जाते हैं, यहाँ तक कि पत्थर तक लुढ़ककर कहीं–से–कहीं पहुॅच जाते हैं, परन्तु मार्ग के यह छोटे–छोटे से पौधे व बेले तुम्हारे शक्तिशाली वेग में भी वैसे ही अपने स्थान पर बने रहते हैं। इसका क्या कारण हैं? समझ में भी नहीं आता''।

सागर का प्रश्न जब सरिता ने सुना तो वह बोली– मेरे रास्ते में जो पेड़ अकड़कर खड़े रहते हैं, वह तो पानी के बेग से उखड़ जाते हैं, अहंकार से भारी पत्थर तक लुढ़ककर वह जाते हैं। परन्तु पानी का बहाव जब तेज होता हैं, तो यह बेलें व छोटी–छोटी घास झुक जाती हैं, और पानी को रास्ता दे देती हैं। यही कारण है कि वह बच जाती हैं। रास्ते में उनसे मुझे कोई रुकावट नहीं होती। इस कारण मेरी उनसे कोई लड़ाई और संघर्ष भी नहीं होता। वैसे ही नम्र व्यक्ति को पहचानकर उसका कोई विरोध नहीं करता। विनम्र व्यक्ति की हमेशा जीत होती हैं।

इस छोटी–सी कहानी से यह सीखने को मिलेगा कि अपने स्वभाव में विनम्रता का गुण होने पर इस संसार में सदैव विजयी हो सकते हैं। अकड़ और अहंकार तो गिराते है, संघर्ष कराते हैं, जीवन में अशांति लाते हैं। अतः अपने स्वभाव में कोमल भावनाएँ सदैव बनाए रखने का प्रयास करना आवश्यक है।

(जनवरी 2021 युग निर्माण योजना)

भारत का निर्यातः अवसर और चुनौतियां- प्रमुख समस्याएं

डॉ0 नीरज प्रफुल्ल अवस्थी,
सहायक निदेशक,
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई

वैश्विक अर्थव्यवस्था के सामने चुनौतीपूर्ण समय है। कोरोना वायरस महामारी ने अपरिहार्य संकट को विकराल कर दिया है। यहां तक कि एक देश के रूप में भारत के लिए उच्च विकास निर्यात उन्मुख नीति पर ध्यान केंद्रित जारी रखा है, सरकार ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के उदारीकरण, विश्व व्यापार संगठन के व्यापार सुविधा समझौता अनुबंध, और 2014 के बाद से इस तरह के अन्य सुधारों के माध्यम से एक सक्षम व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र को सुविधाजनक बनाने में भारी प्रगति की है, जिसने भारत की वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण में सुधार किया है। कोविद की वैश्विक अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत की निर्यात तैयारी को और बढ़ाने के लिए, निर्यात तैयारी सूचकांक (ईपीआई) 2020 भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के निर्यात पारिस्थिति तंत्र की जांच करता है।

यह अध्ययन वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाने में राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका को विस्तृत करता है। विस्तृत करने के लिए, एक बेहतर घरेलू क्षमता भारत को वैश्विक बाजार में एक जीवक्षम आपूर्तिकर्ता बनने के लिए अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनाएगी, जिसके लिए राज्यों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। ईपीआई 2020 का उद्देश्य क्षेत्रीय स्तर पर निर्यात तैयारियों को जानना है। यह मान्य है कि राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत उपाय निर्यात को मजबूत करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं और यह प्रयास घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा में सुधार के साथ शुरू होना चाहिए, इसके अलावा राज्यों की निर्यात प्रतिस्पर्धा में सुधार भी निर्यात की अगुवाई वाले विकास और जीवन स्तर के परिणामस्वरूप वृद्धि के माध्यम से क्षेत्रीय असमानताओं को कम कर सकता है। आर्थिक सर्वेक्षण यह दर्शाता है कि भारत के 70 प्रतिशत निर्यात पर पांच राज्यों – महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु और तेलंगाना का प्रभुत्व है। आर्थिक सर्वेक्षण ने यह प्रमाणित किया कि जो देश दुनिया के बाजारों के

साथ–साथ देश के भीतर अन्य राज्यों के साथ जुड़े हैं, वे समृद्ध हैं, ईपीआई पर भारत का औसत स्कोर 100 में से 39 है, जो भारत को निर्यात आधारित सुपर अर्थव्यवस्था में बदलने की जबरदस्त क्षमता को दर्शाता है। राज्य–वार मूल्यांकन में, नीति और व्यवसाय पारिस्थिति की तंत्र उच्चतम–स्कोरिंग स्तंभ हैं, जिसमें निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र सबसे कम स्कोरिंग स्तंभ है। इसका तात्पर्य है कि भारत में एक अनुकूल व्यापार वातावरण और अनुकूल नीतियां हैं, लेकिन वे एक मजबूत निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र में प्रतिनिधित्व अनुवाद नहीं कर रहे हैं।

कई राज्यों में निर्यात तैयारियों में बाधा डालने वाली कुछ कमियां; खराब व्यापार समर्थन, निर्यात बुनियादी ढांचे में अंतराल, बुनियादी व्यापार समर्थन, वित्तीय सुविधा तक पहुंच में कमी और कम निर्यात ऋण हैं। राज्य–वार विश्लेषण में आगे बताते हुए पता चलता है कि कोई भी राज्य गुजरात और महाराष्ट्र जैसे अपवादों को छोड़कर हर स्तंभ पर अच्छा स्कोर नहीं बना पाया है, जिसके स्कोर स्तंभों में बहुत अधिक असमानता नहीं दिखाते हैं। इस तरह, कई राज्यों की निर्यात क्षमता और संभावित और प्रतिस्पर्धी लाभ अप्रयुक्त अप्रयुक्त हैं।

आज के आर्थिक माहौल में, भारत सहित विकासशील देशों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में गला काट प्रतियोगिता का सामना करना पड़ रहा है। यदि भारत को विश्व व्यापार में एक प्रमुख खिलाड़ी बनना है, तो उसे अपने विदेशी व्यापार के समग्र विकास के बारे में व्यापक विचार करने की आवश्यकता है। भारत के निर्यात से जुड़ी कई समस्याएं हमेशा से रही हैं, इसके साथ निर्यात व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अंदर से उन्मुख आयात को अधिक महत्व दिया गया है। भारतीय निर्यातक की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं:–

1. भाषा का अंतरः प्रत्येक देश की अपनी भाषा होती है। जब एक देश का व्यापारी दूसरे देश के व्यापारी के साथ व्यवहार करता है तो विभिन्न भाषाओं के कारण, यह कठिन हो जाता है।
2. अधिक जोखिमः आंतरिक व्यापार में विदेशी व्यापार की तुलना में जोखिम की मात्रा अधिक है। विदेशी व्यापार में, माल काफी लंबी दूरी से और आमतौर पर समुद्री रास्ते से ले जाया जाता है। समुद्र में चट्टान, लहरें और जलवायु काफी हद तक सामानों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
3. कानूनों में अंतरः निर्यात–आयात से संबंधित नियम प्रत्येक देश में अलग–अलग हैं। प्रत्येक देश में नियमों में अंतर के कारण, भुगतान और व्यापार की अन्य शर्तों के बारे में व्यापारियों के मन में हमेशा कुछ संदेह होता है।

4. भुगतान में कठिनाईः प्रत्येक देश की एक अलग मुद्रा होती है। इसलिए, व्यापारियों को पैसे देते या प्राप्त करते समय बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

5. सीमा–शुल्कः देश के निर्यात–आयात को नियंत्रित करने के लिए, सरकार कस्टम ड्यूटी का उपयोग करती है। आयात पर कर का उद्देश्य विदेशी वस्तुओं की कीमत में वृद्धि करना है ताकि यह घरेलू उपभोक्ताओं के लिए अनाकर्षक हो जाए।

6. सूचना का अभावः दूर के स्थानों पर बैठे किसी भी व्यवसायी की वित्तीय स्थिति और व्यवसाय के विवरण का पता लगाना मुश्किल है। इस तरह की जानकारी बैंकों, सूचना एजेंसियों, चैंबर ऑफ कॉमर्स आदि से ली जा सकती है।

7. आर्थिक निर्भरताः यदि कोई देश कच्चे माल के लिए देश पर निर्भर करता है और यदि युद्ध या कुछ अन्य कारणों से आयात बंद हो जाता है, तो उस देश का पूरा आर्थिक जीवन पंगु हो जाएगा। कभी–कभी एक देश का आर्थिक संकट पूरी दुनिया में फैल गया।

8. अस्थिरताः नीति के अनुसार, उन्नत देश उत्पादन की लागत से भी कम दर पर अपना माल निर्यात करते हैं। जापान ने पूर्व–द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इस नीति को अपनाया और भारतीय कपड़ा उद्योग को भारी नुकसान में डाल दिया।

निनिअ-कोच्ची के मुख्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की रिपोर्ट

निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची, मुख्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन काम हिन्दी में करने में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से हर तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की जाती है। कार्यशाला में कुल 14 पदाधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में भाग लिए प्रतिभागियों की सूची संलग्न है। श्री. पी रमेश प्रभु, मुख्य अधीक्षक राजभाषा, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कोर्परेशन लिमिटेड, कोच्ची ने कार्यशाला का संचालन किया।

कोविड 19 महामारी के प्रकोप के मद्देनज़र प्राप्त निदेश के अनुसार हिंदी कार्यशाला का आयोजन वेबनार के माध्यम से किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री. जी. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी) ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित किया और कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान से कार्यालय के काम हिंदी में निपटाने की पूरी–पूरी कोशिश करने का आह्वान किया। उन्होंने संकाय सदस्य एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और सभी प्रतिभागियों से हिंदी में अधिकाधिक काम करने की संवैधानिक दायित्व निभाने का आग्रह प्रकट किया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में संकाय सदस्य श्री.रमेश प्रभु द्वारा कार्यालय के रोज के कामकाज में प्रयुक्त शब्दावली एवं वाक्यों को हिंदी में बदलने के अभ्यास कराते हुए सभी प्रतिभागियों में सक्रियता बनाए रखने का प्रयास किया गया। दूसरे सत्र में प्रतिभागियों के हिचक को दूर करते हुए ज़्यादा आसान तरीके से हिंदी के कार्यान्वयन सुसाध्य बनाने के सुझावों के साथ सभी प्रतिभागियों के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श करते हुए कक्षा आगे बढायी। कक्षा समाप्त होने से पहले अध्यक्ष महोदय ने सारे प्रतिभागियों से कक्षा से प्राप्त ज्ञान के संबन्ध में सबकी राय जानना चाहा तो सभी प्रतिभागियों ने अपनी अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। साथ ही साथ कार्यशाला का समापन भी संपन्न हुआ। कार्यशाला से संबद्ध कुछ छायाचित्र भी संलग्न हैं।

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कार्यालय अध्यक्ष श्री जयपालन जी, उप निदेशक (प्रभारी)

प्रतिभागियों की एक झलक

कार्यशाला का संचालन करते हुए श्री पी.रमेश प्रभु, मुख्य अधीक्षक राजभाषा, एचपीसीएल, कोच्ची

फ़ूड सेफ्टी खाद्य सुरक्षा सबकी है ज़िम्मेदारी

वसी असगर
सहायक निदेशक
निनिप, नई दिल्ली

आत्म निर्भर बने मेरा भारत, हो गुणवत्ता उत्पाद इसकी शान !
खाद्य सुरक्षा वाले उत्पाद बन जाएँ अपनी पहचान !

फ़ूड सेफ्टी खाद्य सुरक्षा सबकी है ज़िम्मेदारी !
सप्लायर हो, ऑडिटर हो या फिर हो कर्मचारी !
अच्छे भोजन के बनने में सबकी है भागी दारी !
शीर्ष प्रभंधन की है लेकिन महत्त्व पूर्ण हिस्सेदारी !

प्री रेकीजीट प्रोग्राम अर्थात जी एच के और जी एम् पी
पी सी एम् और जी ऐस पी और जी एल पी और ऐस ओ पी

ये सब इम्प्लीमेंट करके फिर आता है 'हैसैप' का नंबर !
हैजर्ड की एक लिस्ट बनालो स्टेप वाइज लिख लिख कर !

टीम बनालो हैसैप के सिद्धांतो का पालन करलो !
फ्लोचार्ट में क्लैरिटी हो ,हृदय को अर्पण करलो !

हैजर्ड का विश्लेषण करके पहचानो सब सी सी पी !
क्रांतिक नियंत्रण बिंदु हैं – तो खाद्य सुरक्षा– गारन्टी !

ट्रेनिंग नियमित करलो सबकी, बनाके वार्षिक–कलेनडर
टॉपिक सारे कवर करो फोकस कर के सब एक एक कर

मॉनिटरिंग हो, ऑडिटिंग हो, और लगातार हो सुपरविजन!
सिसटम बायीपास करने का नहीं रहे कोई रीजन!

हों माइंडसेट में खाद्य सुरक्षा लाने को ढेरों सेशन !
हो जाये सच्चे मन से सिस्टम का इम्पलीमेंटशन !

'वसी' हो हर एक फ़ूड यूनिट में खाद्य सुरक्षा का कल्चर !
गुणवत्ता बने अपनी पहचान और हो जाएँ हम **आत्म निर्भर!**

शहर और गांव.....

धीरेन्द्र प्रताप सिंह
प्रयोगशाला सहायक–II
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोलकाता (प्रयोगशाला)

तेरी हर बुराइयों को हर अख़बार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

गांव में जिंदगी खुशहाल थी हर समय हर हाल में
पैसे कमाने के लिए बदहाल है अब यहाँ हर चाल में
आये दिन ये शहर तू शर्म सार रहता है
और तू मेरे गांव को गवाँर कहता है।

गांव में सब मिल–जुलकर बैठते थे एक साथ एक बार
सुनते और सुनाते थे एक दूसरे को खुशी–गम का सार
शहर ने ला दी दूरी हर परिवार में
और तू इसे भाग्य का कर्म सार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

यह शहर मुझे तेरी औकात पता है
तू चुल्लू भर पानी को वाटरपार्क कहता है
थक गया है हर शख्स काम करते करते यहाँ
तू इसे अमीरी का बाजार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

शहर ने सीखा दिया दौड़ जिंदगी में
मानवता का न रहा होड़ जिंदगी में
शहर और गांव का फर्क तू क्या जानेगा
तेरे लिए पैसा ही हर चीज का उपचार लगता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है ।

गांव चलो वक्त ही वक्त है सबके पास
तेरी सारी फुरसत तेरा हर इतवार कहता है
पैसे के पीछे भाग रहा है हर इनसान यहाँ
मानवता नहीं किसी को किसी के प्रति अब यहाँ
और तू इसे इस दौर का व्यापार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

मौन होकर फ़ोन पर अब रिश्ते निभाए जा रहे
तू इस मशीनरी दौर को परिवार कहता है
जिनकी सेवा में खपा देते थे जीवन सारा
तू उन माँ –बाप को भार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

वो मिलने आते थे कलेजा साथ लाते थे
और तू दस्तूर निभाने को रिश्तेदार कहता है
बड़े– बड़े मसले हल करती थी पंचायतें
तू अंधी भ्रष्ट दलीलों को दरबार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

सब व्यस्त है मोबाइल और लैपटॉप में
किसी को किसी के लिए वक्त नहीं है यहाँ
और तू इसे डिजटलाइजेसन का सार कहता है
बैठ जाते थे अपने पराये बैल गाड़ी में
पूरा परिवार बैठ न पाए तू उसे कार कहता है
अब बच्चे भी बड़े –बूड़ो का अदब भूल बैठे है
तू इस नए दौर को संस्कार कहता है
और तू मेरे गांव को गंवार कहता है।

हिंदी दिवस का महत्व

कमलेश गुप्ता,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
नि.नि.अ–दिल्ली

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में एकमत से यह निर्णय लिया गया कि हिन्दी भाषा ही भारत के संघ की राजभाषा होगी, इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1963 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

वर्तमान में हिंदी का महत्व –

धीरे–धीरे हिंदी भाषा का प्रचलन तथा प्रगति हुई और इस भाषा को राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया, अब हमारी हिंदी भाषा विश्वस्तर पर भी अधिक लोकप्रिय एवं पंसद की जा रही है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। आज विश्व के कोने–कोने में हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए लोग हमारे देश का रूख कर रहे हैं। एक हिंन्दुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानी हिंदी तो आनी ही चाहिए, हमे हिंदी का सम्मान भी करना होगा, और इसको दैनिक काम–काज में प्रयोग में लाना चाहिए।

हिंदी दिवस क्यों मनाया जाता है

हिंदी दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा है, किसी भी देश का गौरव उस देश की संस्कृति एवं उसकी भाषा होती है, कोई भी भाषा एक दूसरे को जोड़ती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा कर्तव्य है, इसलिए 14 सितम्बर के दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाते है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी भाषा को आसानी से बोल–समझ लेता है, यही इस भाषा की पहचान भी है। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत में अपना बोल– बाला बना लिया था, जिसके कारण आज हमारी भाषा को एक दिवस के रूप में मनाना पड रहा है। पहले जहॉ स्कूलों में अंग्रेजी का माध्यम अधिक नही होता था, आज उनकी मॉग बढने के कारण देश बड़े स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे हिंदी में पिछड़ रहे हैं। इतना ही नही, उन्हें ठीक से हिंदी लिखनी और बोलनी भी नही आती है। भारत में रहकर हिंदी को महत्व न देना भी हमारी बहुत बड़ी भूल है।

काम ही आराधना है

निशा शर्मा,
लिपिक–II
नि.नि.अ.–दिल्ली

वर्तमान में मनुष्य की भाग दौड की रोजमर्रा की जिंदगी में आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को भूल कर औपचारिकता की जिंदगी जीने लगते है। इसका परिणाम यह होता है कि हम स्वयं ही बिलासिता की जिंदगी जीने के साथ स्वयं अपने द्वारा रचित जाल में फंसते चले जाते है। आज के समय में मनुष्य अच्छे परिणामों की आशा शीघ्र से शीघ्र पाने की आशा में जीने लगते है। आशानुरूप परिणाम न मिलने के कारण समाज में अपने भाग्य को कोसते हुए अपनी कमजोरियों को अनदेखा कर दूसरों पर दोषारोपण करने लगते है।

उदाहरण के रूप में हमारे आस–पास के माहौल में ऐसे कई उदाहरण मिल जाएगें, जहॉ पर हम अपने कार्य को अनदेखा कर दूसरों की कमियों को उजागर करते हुए अधिक आनन्द की अनुभूति करते है।

आजकल बहुत से व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों व कार्यों को न देखते हुए दूसरों के कार्यों की तुलना करते हुए दूसरों का ऑकलन करते है।

आज की दुनिया कंप्यूटर की गति से देखते हुए हमें अपनी कार्यशैली को भी उसके अनुरूप ढालना होगा, तभी वह परिणाम सामने आएगें, जिनकी समाज को आज बहुत आवश्यकता है। भौतिक सुखों से साधन सम्पन्न होना ही उन्नति का प्रतीक नही है, बल्कि अपनी मानसिकता को परिस्थिति के अनुरूप बदलना आज उतना ही आवश्यक है। अपनी वर्तमान स्थितियों से समझौता कर आराम से बैठे रह कर भाग्य को कोसने से अच्छा है कि सामने जो काम है वह पूरी तन्मयता से करे। केवल और केवल कार्य को ही पूजा के रूप में करके हम तमाम कठिनाईयो को पार कर स्वयं को व समाज को एक उच्च शिखर पर पहुँचा सकते है।

जनसेवा का संदेश

सुभाष शर्मा
आशुलिपिक
नि.नि.अ.–दिल्ली

लाल बहादुर शास्त्री जी ने एक बार देश के सुदुर क्षेत्रों के दौरे पर थे, वे आम जनता से मिलने ऐसे क्षेत्रों में जा रहे थे, जहॉ मूलभूत सुविधाएं नही थी। लेकिन शास्त्री जी के उत्साह में कोई कमी नही थी, हालॉकि उनके साथ चलने वाले लोगों को कठिनाई हो रही थी, कुछ लोगों ने उनको लौटने की सलाह दी।

जब वह एक छोटे से गॉव में बडी देर तक पैदल घूमते हुए दूर तक चले, तो उनके पैर में थोड़ी सी चोट लग गई। उनके साथ आए लोगों ने बड़ी मुश्किल से एक डॉक्टर को बुलाया, डॉक्टर ने आते ही उनके जख्म का उपचार किया, और दवाईयाँ खाने को दी, फिर कुछ जरूरी हिंदायते देकर वह जाने लगा, तो शास्त्री ने उसकी फीस उसे देनी चाही, डॉक्टर पैसे देखकर सकपका गया।

उसने शास्त्री जी को पैसे लौटाते हुए कहा, महोदय छोटी सेवा के बदले फीस देकर शर्मिदा न करें, मैं आपके काम आ सकूँ, यही बहुत है।

शास्त्री जी विनम्रतापूर्वक बोले, डॉक्टर साहब मैं आपको पैसे दे सकता हूँ। अगर आप ऐसा कर सके तो यह मेरे ऊपर बहुत बड़ा अहसान होगा, यह सुनकर डॉक्टर बेहद प्रभावित हुआ। उसने अपना सारा जीवन गरीबों की सेवा में लगा दिया, शास्त्री जी ने इसी तरह कई लोगों का जीवन बदला था।

प्रदूषण - एक गंभीर समस्या

जयकृष्ण यादव
लेखाधिकारी,
निनिअ–दिल्ली

प्रस्तावना– प्रदूषण का अर्थ है– प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाध्य मिलना, न शांत वातावरण, प्रदूषण अनेक प्रकार का होता है, प्रमुख प्रदूषण है, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, और ध्वनि प्रदूषण, आदि, विज्ञान के इस युग में मानव को जहाँ कुछ वरदान मिले हैं वहां कुछ अभिशाप भी मिले है। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है जो विज्ञान की कोख में से जन्मा हैं और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है।

वायु प्रदूषण – महानगरों में यह प्रदूषण अत्यधिक फैला हुआ है। वहॉ चौबीसो घंटो कल–कारखानों का धुंआ, मोटर– वाहनों का काला धुंआ इस तरह फैला हुआ है कि स्वस्थ वायु में सांस लेना दूभर हो गया है, यह कण सांस के साथ मनुष्य के फेफडों में चले जाते है। और असाध्य रोगों को जन्म देते है। यह समस्या बडे महानगरों में और सघन आबादी वाले क्षेत्रों में होती है। तथा वृक्षों के काटने तथा उनके अभाव के कारण वातावरण में अशुद्वता उत्पन्न होती है।

जल प्रदूषण– कल कारखानों का दूषित जल नदी–नालों मे मिलकर भयंकर जल– प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गंधित जल नाली– नालों में मिलकर प्रदूषण पैदा करता है, और अनेक बीमारियों को जन्म देता है।

ध्वनि प्रदूषण– मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण होना चाहिए, परंतु आजकल – कारखानों का शोर, यातायात का शोर, वाहन का शोर, लाउड स्पीकर का शोर, कर्णभेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव का जन्म दिया है।

प्रदूषणों के दुष्परिणाम– उपरोक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वथ्य जीवन को खतरा पैदा हो गया है, खुली हवा में लंबी सांस लेने को मानव तरस गया है। गंदे जल के कारण कई बीमारियों का कारण बन चुकी है, जोकि मानव के शरीर में जाकर घातक बीमारियों को पैदा करती है। उदाहरण के तौर पर भोपाल गैस कारखाने से निकली गैस के कारण हजारों लोगों की जान गई थी। पर्यावरण एकदम बदल चुका है, न समय से वर्षा और न सर्दी व गर्मी का चक्र ठीक चलता है, सुखा, बाढ, ओलावृष्टि के प्राकृतिक प्रकोपों

का कारण भी प्रदूषण है।

प्रदूषण के कारण– प्रदूषण को बढाने में कल–कारखानों वैज्ञानिक साधनों की अधिकता से उपयोग, कूल एसी आदि वातानुकूलक उर्जा संयंत्र आदि दोषी है। प्राकृतिक संतुलन का बिगडना भी मुख्य कारण है। वृक्षों को काटने से मौसम का चक्र बिगड़ जाता है, घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है।

क्योंकि संघर्ष अभी भी बाक़ी है

शीतल
प्रयोगशाला परिचर
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोलकाता (प्रयोगशाला)

कुछ और अभी चलना होगा
थमने से काम नहीं होगा,
थककर, हार मान जाने से
कुछ भी हासिल नहीं होगा।
थकोगे भी, कमजोर पड़ोगे भी,
पर फिर से उठकर चलना होगा।
क्योंकि संघर्ष अभी भी बाक़ी है
क्योंकि.....

कुछ साथ चले कुछ छूट गए
कुछ अपने धोखेबाज बने,
टुकड़ों में बिखरी आशाओं को
फिर से समेट कर चलना होगा।
चलना होगा आगे बढ़ते रहना होगा
चलते ही रहना होगा।
क्योंकि संघर्ष अभी बाक़ी है
क्योंकि.....

जीवन संघर्ष है लड़ते रहो....

धीरेन्द्र प्रताप सिंह
प्रयोगशाला सहायक–II
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोलकाता (प्रयोगशाला)

जीवन संघर्ष है लड़ते रहो
उठो चलो आगे बढ़ते रहो।।

जीत का कोई जादुई मंत्र नहीं
हार का कोई विकल्प नहीं
एहसासे जश्न जीत का
बिन हार के गम के संभव नहीं।।

जो हार के डर से डर गया
उसके जीवन में संघर्ष है क्या
आलस्य निराशा त्याग कर तुम
जी जान से कोशिश करते रहो।।

उठो चलो आगे बढ़ते रहो
जीवन संघर्ष है लड़ते रहो।।

बिन संघर्ष जीवन का अर्थ नहीं
मेहनत करना कभी व्यर्थ नहीं
जीवन व्यर्थ है उनका
जिनके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं।।

रंग लाएगी हर मेहनत एक दिन
निरंतर लक्ष्य का पीछा करते रहो।।

उठो चलो आगे बढ़ते रहो
जीवन संघर्ष है लड़ते रहो।।
लक्ष्य का संकल्प होगा उसी का पूरा
जिसके संकल्प में दृढ़ निश्चय होगा
यदि दृढ़ निश्चय से कुछ नहीं होता
तो पत्थरों को चीर कर झरना नहीं बहता।।

प्यास सफलता की तभी होगी पूरी
जब अग्नि जिज्ञासा की प्रज्वलित करते रहो।।

उठो चलो आगे बढ़ते रहो
जीवन संघर्ष है लड़ते रहो।।

कौन है जो गिरा नहीं
हारा वही जो गिर के उठा नहीं
जो गिर के उठा वो जीत गया
अपने लक्ष्य के समीप गया
आसमां भी झुकेगा पुरुषार्थ के आगे
यूँ जुनून के हद से गुजरते रहो
उठो चलो आगे बढ़ते रहो।।

जीवन संघर्ष है लड़ते रहो
उठो चलो आगे बढ़ते रहो।।

निर्यात व्यापार में प्रयोगशाला की भूमिका

अमिताभ पांडेय
सहायक निदेशक (तकनीकी)
निर्यात निरीक्षण अभिकरण– चेन्नई प्रयोगशाला

प्रस्तावना

विश्व व्यापार संगठन की स्थापना से सभी देशों को विश्व बाजारों में अधिक पहुंच से लाभान्वित होने का अवसर मिला है। वैश्विक व्यापार तेजी से और महत्वपूर्ण रूप से उपभोक्ताओं की बढ़ती शिक्षा और उपभोक्ताओं की जागरूकता, स्वाद और आदतों के अंतर्राष्ट्रीयकरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास और संचार और परिवहन और खाद्य सुरक्षा में सुधार से जुड़ी मांगों के कारण तेजी से बढ़ रहा है। प्रशुल्क बाधाओं और मात्रात्मक प्रतिबंधों के टूटने के साथ मिलकर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में गुणवत्ता और सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। न केवल दुनिया भर में उपभोक्ताओं को गुणवत्ता के प्रति जागरूक किया गया हैए बल्कि एक ही समय में सरकारों ने स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी विचारों के आधार पर कड़े नियमों को लागू करके अपनी आबादी के स्वास्थ्य और सुरक्षा की रक्षा में अपनी भूमिका का एहसास किया है।

प्रयोगशाला

प्रयोगशालाएं खाद्य सुरक्षा, निर्यात और आयात व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि खाद्य गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सूक्ष्मजीवविज्ञानी और रासायनिक परीक्षण एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। आंतरिक गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाओं सहित सभी प्रयोगशालाओं पर विचार करना चाहिए कि क्या उनकी स्थिति को चुनौती दी जा सकती है और बढ़ाया जा सकता है। प्रबंधन और तकनीकी पहलुओं से प्रयोगशाला संचालन की क्षमता का स्वतंत्र मूल्यांकन और आश्वासन केवल आईएसओ / आईईसी 17025 2017 मानक मान्यता के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

प्रयोगशालाएँ निरीक्षण, प्रमाणन गतिविधि की रीढ़ हैं। आयात करने वाले देशों द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं का परीक्षण करने के लिएए प्रयोगशालाओं में अत्याधुनिक उपकरण और जनशक्ति होनी चाहिए जो ऐसे उपकरणों को संचालित करने के लिए योग्य और प्रशिक्षित हों। निर्यात निरीक्षण और प्रमाणन सेवाओं द्व ारा उपयोग की जाने वाली प्रयोगशालाओं को आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त कार्यक्रमों के तहत अंतर्राष्ट्रीय मानक आईएसओ 17025 2017 के अनुसार मान्यता आवश्यक है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि परीक्षण के परिणामों की विश्वसनीयता के लिए पर्याप्त गुणवत्ता नियंत्रण उपलब्ध हैं। विश्लेषणात्मक परिणामों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत गुणवत्ता आश्वासन तकनीकों को लागू किया जाना चाहिए।

भारत में निर्यात नियंत्रण प्रणाली

भारत 1963 से निर्यात नियंत्रण प्रणाली का संचालन कर रहा है, जिसे निर्यात (गुणवत्ता नियंत्रण और निरीक्षण

ा) अधिनियम, 1963 के तहत अच्छी तरह से परिभाषित और स्थापित किया गया है। अधिनियम केंद्र सरकार को पोत लदान से पूर्व निरीक्षण और प्रमाणन के लिए वस्तुओं को अधिसूचित करने का अधिकार देता है, न्यूनतम निर्दिष्ट करें मानक (आम तौर पर अंतर्राष्ट्रीय पहचान करने वाले, आयात करने वाले देशों के मानकों और अनुबंध संबंधी विनिर्देशों), और निर्यात निरीक्षण और प्रमाणन के तरीके को निर्धारित करते हैं, चाहे वह अनिवार्य हो या स्वैच्छिक।

निर्यात नियंत्रण प्रणाली निर्यात निरीक्षण परिषद (EIC) द्वारा संचालित है, जो भारत का आधिकारिक निर्यात प्रमाणन निकाय है, अपने क्षेत्र संगठनों, निर्यात निरीक्षण अभिकरण के माध्यम से, चेन्नई, दिल्ली, कोच्चि, कोलकाता और मुंबई, उप–प्रमुखों के कार्यालय हैं, देश भर में प्रयोगशालाओं सहित कार्यालय।

वर्षों से, अधिनियम के प्रावधान के तहत, सरकार द्वारा पोत लदान से पूर्व निरीक्षण और प्रमाणन और प्रयोगशाला परीक्षण जैसे रसायनों, कीटनाशकों, रबर उत्पादों, इंजीनियरिंग उत्पादों, खाद्य और कृषि उत्पादों, कपड़ा के लिए लगभग 1000 वस्तुओं को अधिसूचित किया गया है। फुटवियर आदि हालांकि, वर्तमान में केवल संवेदनशील उत्पाद जैसे कि समुद्री उत्पाद, अंडा उत्पाद, डेयरी उत्पाद, पोल्ट्री उत्पाद और शहद अनिवार्य निर्यात प्रमाणन, निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा प्रयोगशाला परीक्षण के तहत हैं।

प्रयोगशालाओं को मजबूत बनाना निर्यात नियंत्रण और प्रमाणन को आयात करने वाले देश की जरूरतों को पूरा करते हुए परीक्षण सुविधाएं का सहारा लेना पड़ता है। यूरोपियन कमिशन जैसे देशों की आवश्यकताओं के कारण निर्यात प्रमाणन करके, भारत सबसे कठोर आवश्यकताओं के विरुद्ध परीक्षण करने के लिए अपनी परीक्षण क्षमताओं का निर्माण करने में सक्षम रहा है। उदाहरण के लिए, ईसी बाजारों के लिए समुद्री उत्पादों, अंडा उत्पादों आदि को प्रमाणित करते हुए, पशु चिकित्सा के अवशेष, कीटनाशक, भारी धातुए विषाक्त पदार्थों आदि को 1 भागों प्रति अरब से कम या उससे कम स्तर पर परीक्षण के लिए एचपीएलसी एमएस एमएसए जीसी एमएस एमएसए आईसीपीए मएसए यूपीएलसी आदि जो प्रयोगशालाएं विशेष रूप से निर्यात परीक्षण के लिए उपयोग की जा रही हैं, वे सभी आईएसओ 17025 2017 के अनुसार मान्यता प्राप्त हैं। निर्यात प्रमाणन ने परीक्षण सुविधाओं को मजबूत करने और उन्हें सबसे अधिक विकसित लोगों के बराबर लाने के लिए प्रेरित किया है।

निष्कर्ष

यद्यपि निर्यात प्रमाणन प्रणालियों में प्रयोगशाला परीक्षण के महत्व को पूरी तरह से मान्यता दी गई है, लेकिन खाद्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए खाद्य पदार्थों में तेजी से वैश्विक व्यापार में तेजी से बढ़ रहे वैश्विक परिदृश्य में प्रयोगशालाएं बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ये आयात करने वाले और निर्यात करने वाले दोनों देशों के लिए उपयोगी होंगे और यह सुनिश्चित करते हुए कि संसाधनों का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से करने में मदद करेंगे, जबकि निर्यात किया जाने वाला खाद्य पदार्थ सुरक्षित है और आयात करने वाले देश की स्वच्छता आवश्यकताओं के साथ–साथ किसी भी स्वैच्छिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, जिसे इसमें प्रणाली बनाया भी जा सकता है। हालाँकि इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि खाद्य निर्यात और निर्यात निरीक्षण और प्रमाणन प्रणाली के रचना, संचालन, मूल्यांकन और प्रत्यायन के लिए कोडेक्स दिशानिर्देशों के आधार पर ऐसी निर्यात नियंत्रण प्रणाली स्थापित की जाती है।

ऑनलाइन शिक्षा

शेखरानन्द,
क. हि. अनुवादक
नि.नि.अ.–दिल्ली

शिक्षा मानव के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना हर देश के नागरिक का अधिकार है, शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते पर अपने कैरियर का निर्माण करता है। शिक्षण एवं महान आविष्यकारों में प्रगति के कारण 1950 की तुलना में शिक्षा आज बहुत विविध है, आजकल वर्तमान जीवन में ऑन–लाइन शिक्षा का बोलबाला है ऑनलाइन शिक्षा का एक ऐसा माध्यम है जहॉ शिक्षक दूर से दुनिया के किसी भी कोने से इंटरनेट के माध्यम से जुड सकता है। शिक्षक स्काइप, जूम आदि एप्स के माध्यम से वीडियों कॉल करते है और बच्चे लैपटॉप या कंप्यूटर पर शिक्षक को देखकर सुन सकते है।

शिक्षक बच्चों को पढाने के लिए अपने कम्प्यूटर की स्क्रीन शेयर करते है, जिससे बच्चे घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते है।

लॉकडाउन के वक्त जहॉ सभी शिक्षा केंद्र बंद है वहाँ ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी अच्छी जगह बना ली है, आज सारे विश्व के शिक्षार्थी ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग आसानी से पढाई कर पा रहे है। ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त

करने के लिए अच्छी और तीर्व गति का इंटरनेट कनेक्टिविटी की जरूरत है शिक्षक दूरस्थ शिक्षा में वीएच अस वीडियो, डीवीडी और इंटरनेट के पाठ्यक्रमों के अनुसार बच्चों को पढाते है। 1993 में आर्नलाइन शिक्षा को कानूनी कर दिया गया। और एक अनोखा तरीका है, जिसके माध्यम से सभी उम्र की छात्र पढ़ाई कर सकते है।

ऑनलाइन शिक्षा के कई ऐसे लोकप्रिय लर्निग एप्स है, जैसे बाईजूस, मेरिटनेशन जिसमें सीबीएसई के पाठ्यक्रम की सभी कक्षाओं की विषय साम्रगी मौजूद है। जिसके माध्यम से बच्चे विडियोज देखकर मुश्किल पाठ्यक्रम को भी आसानी से समझ सकते है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को दिलचस्प बनाने के लिए हर शिक्षक बेहतरीन टूल्स का इस्तेमाल करता है। ताकि बच्चों को सीखने में आसानी मिल सकें।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है, जो काम करते हुए या घर की देखभाल करने के साथ अपनी शिक्षा जारी रख सकते है, अपनी सुविधा अनुसार वह ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते है। यह एक नई प्रकार की शिक्षा है, जो विश्व अपना रहा है, विधार्थियों को जरूरत है कि वह मन लगा कर पढे, और अपना और अपने देश का भविष्य उज्जवल करें, जो बच्चे ऑनलाइन पढाई करने में असमर्थ है, उनके लिए निशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था कराने की जरूरत है । ताकि शिक्षा से कोई वंचित ना रहे। ऑनलाइन शिक्षा एक अत्यन्त बढिया माध्यम है, जहॉ छात्रों को अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

प्लास्टिक प्रदूषण के कारण एवं प्रभाव (स्वच्छता ही सेवा है)

राहुल शर्मा
कार्यालय सहायक,
निनिप, नई दिल्ली

प्रकृति एवं मानव ईश्वर की सबसे अनमोल देन है। जिस प्रकार विज्ञान ने तरक्की की है, मानव जाने अनजाने अपने आप को पतन की और ले जा रहा है। मानव के जीवन में प्लास्टिक एवं प्लास्टिक से बने उत्पाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक मानव विभिन प्रकार से प्लास्टिक का उपयोग करता है। जैसे सुबह दातों के लिए ब्रश प्लास्टिक का, नहाने के लिए बाल्टी एवं मग प्लास्टिक का, पीने के पानी की बोतल प्लास्टिक की तथा लंच के लिए खाना प्लास्टिक के डिब्बे में ले जाया जाता है। आजकल फास्ट फूड का चलन बहुत बढ़ गया है। लोगों को फ़ास्ट फूड प्लास्टिक के थेलियो में डाल कर दिया जाता है। भारत में एक वर्ष में प्लास्टिक का लगभग 65 लाख टन उत्पादन होता है। पूरे विश्व में जितना प्लास्टिक प्रदुषण होता है उसमे भारत का 60 प्रतिशत हिस्सा है। प्लास्टिक

बनाते समय विभिन्न प्रकार के जहरीले पदार्थो का प्रयोग किया जाता है। यह ऐसे पदार्थ है जिसको नष्ट करना लगभग असंभव है। प्रकृति एवं मानव जीवन पर प्लास्टिक का प्रदुषण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, इसके कारण मानव को कई भयंकर बीमारियों ने अपनी चपेट में ले लिया है। प्लास्टिक के बढ़ती खपत को देखकर लगता है कि प्लास्टिक भविष्य में मानव पतन का कारण बनेगा। प्लास्टिक प्रदुषण के कारण निम्न प्रकार हैः–

1. **पॉली बैग्सः** यह कहना गलत नहीं होगा कि जिस प्रकार मानव लगातार तरक्की कर रहा है वह अपने आप को आलसी बना रहा है। आजकल घर की ज़रुरत का सारा सामान बाजार से पॉली बैग्स में डाल कर दिया जाता है। खाने पीने की सारी वस्तुएं जैसे दूध फल सब्जिया सभी पॉली बैग्स में डाल कर देने का चलन हो गया है। यह पॉली बैग्स एक बार यूज़ कर के फेक दी जाती है, जो पशुओं तथा मानव जीवन के लिए विष के समान है। यहाँ तक की बचे हुए खाने को भी पॉली बैग्स में भरकर फेक दिया जाता है, जिसे पशु खाना समझ कर खा लेते है। वही उनकी आंतो एवं स्वांस की नली में फस कर उनकी मृत्यु का कारण बनता है। यदि यह जमीन में दबा दिए जाएँ तो वह वहां की भूमि की उपजाऊ शक्ति ख़त्म कर देता है ।

2 **पानी की बोतलः** पानी की खाली बोतलें प्रदुषण का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। इंसान पानी की बोतले केवल एक बार प्रयोग करके फेंक देता है। आजकल कहीं घूमने जाओ तो हर जगह पानी की खाली बोतले नजर आती है। यह पानी की बोतले बारिश में बहकर नदी नालो में जाकर बाढ़ का कारण बनती है एवं समुह में जाकर मिलने वाली नदियों से होकर ये बोतले समुंद्री जीवो के लिए खतरा बनती है। कई ऐसी प्रजाति है जो खतरे में है।

3 **दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएंः–** मनुष्य प्रतिदिन कई प्लास्टिक से बनने वाली वस्तुओं का प्रयोग करता है जैसे दातो के लिए ब्रुश, बालो के लिए कंघा, शैम्पू प्लास्टिक की बोतल में, नहाने के लिए प्लास्टिक की बाल्टी, खाने के लिए प्लास्टिक का लंच बॉक्स एवं ऐसी वस्तुएँ जो एक बार प्रयोग में लाने के बाद दुबारा प्रयोग में नहीं लायी जा सकती जैसे खाने के लिए प्लास्टिक से बने बर्तनो का प्रयोग करना.

मानव जीवन पर प्रभावः – मानव जीवन पर प्लास्टिक प्रदुषण का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। खाने पीने की वस्तुए जो प्लास्टिक में पैक होकर आती है उन वस्तुओं में हानिकारक विषैले रसायन

खाने में मिल जाते है। जिसकी वजह से कैंसर जैसी भयानक बिमारियां जन्म ले रही है। थेलिया एवं बोतले नदी नालो में फसकर बाढ़ का मुख्य कारण बनती है।

मिट्टी पर प्रभावः— प्लास्टिक कई प्रकार के रसायन से मिलकर बनाया जाता है। यदि प्लास्टिक को मिटटी में दबा दिया जाए तो यह वहां की भूमि को बंजर बना देता है। प्लास्टिक के निचे दबे रहने वाले बीज भी अंकुरित नहीं हो पाते है। इससे पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

वायु पर प्रभावः— प्लास्टिक को जलाने पर कई प्रकार की जहरीली गैस हवा में घुल जाती है। जो न सिर्फ मानव के लिए बल्कि पशु पक्षियों के लिए भी हानिकारक होती है। यह विषैली गैस वायुमंडल में मिलकर अनेक प्रकार के स्वास एवं चरम रोग का कारण बनती है।

समुद्री जीवों पर प्रभावः प्लास्टिक की थैलियां एवं बोतले वर्षा होने पर नदी नालो के माध्यम से सागरो में चली जाती है, जिसे समुंद्री जीव भोजन समझ कर खा लेते है। जोकि उनकी स्वास की नाली एवं आतों में फस जाता है और इस कारण उनकी मृत्यु हो जाती है।

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है। इस वर्ष भारत ने इसकी मेजबानी की थी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भारत द्वारा किये गए प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए किये गए प्रयासों को सराहा है। प्लास्टिक प्रदुषण को कम करने के लिए भारत सरकार ने अनेक अभियान चलाये है। पूरे भारत वर्ष के लोगो ने इस अभियान में बढ़—चढ़ कर हिस्सा लिया है।

1. प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का पूर्ण रूप से बहिष्कार होना चाहिए।
2. बाजार से सामान लाते समय प्लास्टिक की थैली की जगह कपडे या कागज से बने थैले का प्रयोग करना चाहिए।
3. पानी की खाली बोतलों को फेकने की स्थान पर उसे दोबारा प्रयोग में लाया जाना चाहिए।
4. बच्चों को स्कूलों में प्लास्टिक प्रदूषण के होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना चाहिए।
5. प्लास्टिक से बनने वाले थैली की इकाइयों को काम करना चाहिए।
6. खाने एवं पीने की वस्तुओं को मिट्टी या स्टील से बने बर्तनो में प्रयोग करना चाहिए।
7. प्लास्टिक एवं प्लास्टिक से बनने वाले उत्पादों को फेंकने की बजाये उन्हें रीसायकल इकाई में भेज देना चाहिए ताकि उन्हें दोबारा प्रयोग में लाने लायक बनाया जा सके।

अवसाद (डिप्रेशन)

अंजू शर्मा
लिपिक श्रेणी–II
नि.नि.प.–नई दिल्ली

ये शब्द अवसाद,
जिंदगी के शब्दकोश में,
डाले हम बैठे हैं,
सोचो किया क्या ऐसा,
क्यों इसे पाले बैठे हैं !

खुली हवा में,
घुटन का अहसास,
बंद कमरे में आजादी की,
उम्मीद किये बैठे हैं!

जीने की वजह कई,
अवसाद में घिर कर,
क्यों तैयार मरने को बैठे हैं !

जो मिला क़िस्मत का,
उसे ठुकराने को तैयार बैठे हैं !
जो था नहीं हाथों की लकीरों,
उसे उभारने को बेताब बैठे हैं !

है पल दो पल को जो अपना,
फ़लक पर बैठाने को उसे तैयार बैठे हैं!
तुम्हें जो दिया जन्मए नींद रातों की अपनी,
उसे जमीं पर गिराने को तैयार बैठे है!

जीने की वजह कई,
अवसाद में घिर कर,
क्यों तैयार मरने को बैठे हैं !

निर्यात निरीक्षण अभिकरण-मुंबई कार्यालय में नए पदभार ग्रहण/ सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी/कर्मचारियों के नाम/पदनाम

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्त	फोटो
1.	श्री एस. ए. पाशा निनिअ–मुंबई (मुख्यालय)	सहायक निदेशक	31 अगस्त, 2020	
2.	श्री रमेश दयाभाई सोलंकी निनिअ–मुंबई (मुख्यालय)	एम.टी.एस.	31 मई,2020	
3.	श्री एन. के. मेंघनाथी निनिअ–मुंबई उप कार्यालय–वेरावल	प्रयोगशाला परिचर	31 मई, 2020	
4.	दीपक सोनी	प्रयोगशाला सहायक	20 जून, 2020	

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

दूरभाष : 011–20815386 / 87 / 88

वेबसाई : www.eicindia.gov.in   ई–मेल : eic@eicindia.gov.in

EXPORT INSPECTION COUNCIL

(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)

2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex, East Kidwai Nagar, New Delhi - 110023, India

Phone : +91-11-20815386 / 87 / 88

E-mail : eic@eicindia.gov.in, Website : www.eicindia.gov.in